दिनांक 17 जनवरी, 2010 को वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान में आयोजित वार्षिकोत्सव हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन।

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ आयोजित वनस्थली विद्यापीठ के 74वें वार्षिकोत्सव में आप सबके बीच आकर मुझे अत्यधिक खुशी हो रही है।

मेरी पहली यात्रा–

वस्तुतः वैदिक काल से ही महिला शिक्षा की गौरवशाली परम्परा विद्यमान थी। महिलाओं को पुरूषों के तुल्य ही शिक्षा प्राप्त करने के सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। वह किसी भी रूप में पुरूषों से हीन नहीं

थी। हमारे भारतीय समाज में विदुषी नारियों का अविस्मरणीय योगदान रहा हैं। हमारे धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा एवं प्रतिष्ठा होती है, वहीं देवता विचरण करते हैं। नारियों को इतना सम्मान देने के साथ ही उनकी शिक्षा–दीक्षा पर भी निरन्तर जोर दिया जाता रहा है।

पूर्व प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू का मानना था कि ''जनता में जागृति फैलाने के लिये नारी को जागृत करना चाहिये। एक बार वह आगे बढ़ी तो परिवार आगे बढ़ेगा, गाँव आगे बढ़ेगा और अंततः सारा देश आगे बढ़ेगा। नारी के जागृत होने का अर्थ है–

बच्चों की अच्छी शिक्षा। इस तरह उसे जगाकर हम आज के बच्चों को जगा सकेंगे और आज के बच्चों से भावी भारत का निर्माण होगा''।

एक युग था जब महिलाओं का घर से बाहर की दुनिया से कुछ लेना–देना नहीं था, उनका कार्य क्षेत्र घर की चाहरदिवारी तक ही सीमित था। लेकिन आज स्थिति काफी हद तक बदली है और बदल रही है।

मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ महिलाओं ने अपनी प्रतिभा, विद्वता, दूरदर्शिता, कार्य–दक्षता, सहनशीलता, दया, करूणा और ममता की छाप न छोड़ी हो। सभी क्षेत्रों में महिलायें दृढ़

इच्छा शक्ति से पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रही है। नारी शक्ति का प्रतीक है। हमारे समाज में हमेशा से नारी को बड़ा सम्मान दिया जाता रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी नारी ने अपनी बुद्धि, शक्ति एवं शौर्य का परिचय दिया है तो वह बेजोड़ रहा है। हमें अपने देश की ऐसी नारियों पर गर्व होना चाहिये।

परन्तु कुछ पक्ष अत्यन्त चिन्ता के भी उभरे हैं। ज्ञान और विज्ञान के इस आधुनिक युग में कन्या भ्रूण हत्या और दहेज हत्या जैसी सामाजिक बुराई सामने आ रही है। ये घटनाएं समाज को कंलकित करने के साथ महिला और पुरुष के अनुपातिक अन्तर को

भी बिगाड़ रही हैं। समाज के इस पक्ष को सुधारने में महिलाओं को सक्रिय योगदान करना होगा– तो साथ ही पुरूषों को अपनी सोच बदलनी होगी।

एक अच्छी बात नजर आ रही है और मैं महिला विद्यार्थियों को खुशी से सराहना चाहता हूँ कि जब मैं विश्वविद्यालयों के दीक्षान्त समारोह और महा–विद्यालयों एवं अन्य शिक्षण संस्थाओं में जाता हूँ वहाँ ज्यादा पदक और पुरस्कार प्राप्त करने में बेटियों की संख्या अधिक होती है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित यह वनस्थली वीद्यापीठ लगभग 75 वर्षो से महिला शिक्षा के क्षेत्र में

अभूतपूर्व योगदान दे रहा है। महिला शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य की सम्पूर्ति में विशिष्ट योगदान देने वाले इस संस्थान में शिशु कक्षा से लेकर उच्च स्तरीय शोध अध्ययन तक की व्यवस्था है। आप अवगत हैं कि वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक, पं0 हीरालाल शास्त्री तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतन शास्त्री, जिन्होंने अपनी पुत्री शान्ताबाई के असामयिक निधन के दुःख दर्द को भुलाने के लिये इस संस्थान की स्थापना की, इस प्रकार उन्होंने ''एक बेटी को खोया, हजारों बेटियों को पाया''। कितना अच्छा हो कि समाज में इस अनुकरणीय उदाहरण से अन्य लोग प्रेरणा लें। यह प्रसन्नता की बात है कि इस

विद्यापीठ की अनेक छात्राएं अमेरिका एवं यूरोप में प्रमुख बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में कार्य कर देश का नाम रौशन कर रही हैं।

शिक्षा का उद्‌देश्य वास्तव में व्यक्ति को सही एवं गलत में अन्तर सिखाते हुए उसे सकारात्मक लक्ष्यों के प्रति समर्पित करना होता है। हमारी शिक्षा नीति में चरित्र और संस्कारों के निर्माण पर आवश्यक जोर दिया जाना चाहिए। इस संबंध में डा0 सम्पूर्णानन्द ने कहा है कि ''मन और शरीर का, चरित्र के भावों का परिष्कार हो, शिक्षा का यही प्रयोजन है''।

किसी भी संस्थान को विश्वविद्यालय का नाम दे देने से वह विश्वविद्यालय नहीं हो जाता। विश्वविद्यालय वह है, जहाँ मौलिक

विचारों का सृजन हो, उच्च्व स्तर के शोध कार्य हों और जहाँ विद्यार्थियों एवं आचार्यो में ज्ञान पिपासा हो। मैं समझता हूँ कि हमारे शैक्षिक संस्थानों को इस कसौटी पर खरा उतरना होगा।

शिक्षा में मौलिक चिन्तन के साथ ही वैज्ञानिक विचारधारा का विकास भी आवश्यक है। आज का युग विज्ञान का युग है। मनुष्य के अधिकांश समस्याओं का समाधान विज्ञान के पास है। इसी प्रकार शिक्षा का अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है राष्ट्र की अवधारणा को आत्मसात करने हेतु प्रेरित करना एवं राष्ट्र की संस्कृति से परिचित कराना।

उप निषदों के वाक्य ''चरेवैति–चरेवैति'' और स्वामी विवेकानन्द जी के उद्‌घोष 'उत्तिष्ठ जागृत प्राप्य वरान्निबोधत्' से प्रेरणा लेकर चल पड़ें और तब तक चलते रहें, जब तक लक्ष्य न प्राप्त कर लें।

धन्यवाद। नमस्कार।